मैथिली (अनिवार्य भाषा)
(Part - I)
(Sc., Arts, Com.)
Lecture No - 1
Unit - 1

Page No.:
Date 03/07/2020

डॉ० अरविन्द झा
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग
मारवाड़ी महाविद्यालय
दरभंगा
मो० - 9040201409

कविता - संग्रह

नवधा भक्ति — गोविन्द दास

कवि गोविन्द दासक नवधा भक्ति मे भक्तिक नवो रूप केँ देखवा ओल गेल अछि। कवि एहि कविताक माध्यमे जन मानसक हेतु सरल रूप मे भक्तिक मार्ग केँ देखौलनि अछि। भक्तिक अनेक प्रकार होइछ ताहि मे ई नवधा भक्ति अति सरल ओ लोकप्रिय अछि। एहि कविता मे ईश्वरक भक्ति नौ प्रकारे कोना कए सकैत छी से देखवा ओल गेल अछि।

पद अछि —

"भजहु रे मन नन्द नन्दर
अभय चरणारविन्द।
दुर्लभ मानुष - जनम सत्संग
तरह ए भव - सिन्धु"

भक्त अपन मोन केँ स्वयं सम्बोधित करैत कहैछ जे रे मन नन्द के नन्दन (पुत्र) श्रीकृष्णक चरण - कमलक सेवामे लगावह।

श्रीकृष्णे एहि संसार मे अभय प्रदान करए वला छथि। ओएह सभ प्रकारक सांसारिक कष्ट सँ मुक्त करै सकैत छथि। मनुष्यक जीवन बड़ दुर्लभ सँ भेटैत छैक तेँ सज्जन लोग एहि सत्संग करइ, जाहि सँ एहि संसार रूपी भव सागर सँ पार कऽ सकबइ। नहि तऽ पुनः मनुष्यक जीवन नहि भेटतइ आ ने सत्संग नहि कऽ सकबइ। शील, ताप, दया, पानि तऽ प्रकृतक वस्तु थिकैक ओकर प्रभाव तऽ सभ पर पड़िते रहैत छैक, जीवनक एहि बहुमूल्य समय के उपयोग सेवा मे लिए बर्बाद करैत छइ। ओकर सेवा सँ क्षणिक सुख भेटतइ मुदा भगवानक सेवा सँ असली परमानन्दक सुख प्राप्त होएतइ। तेँ सत्कार्य मे अपन समय व्यतीत करइ।

" ई धन भवन कुल परिजन
सबहिं आइ परतीति।
कमलदल जल जीवन टलमल
भजहु हरि-पद नीति॥"

धन-सम्पत्ति, पुत्र आ कुटुम्ब सभक कोनो विश्वास नहि, कखन संग छोड़ि देत, से नहि कहल जा सकैछ। जेना कमलक पात पर जल स्थिर नहि रहैत अछि तहिना जीवन सेहो टलमलाइत रहैत अछि आ जलक समान विलीन भए जाइत अछि। तेँ एहि मनुष्यक जीवन के सार्थक करइ। सदैव हरि पदक पूजन आ स्मरण करैत रहऽ, एहि सँ तोहर जीवनक

मोक्ष प्राप्त भऽ सकैत छइ। अपन जीवन के भक्ति भाव से लगाबथु।

"श्रवण कीर्तन स्मरण वन्दन
पद-सेवन दास
पूजन ध्यान आत्म-निवेदन
गोविन्ददास अभिलाष"

भक्त कवि गोविन्द दास श्रीकृष्णक भक्ति मे रमल छथि। कवि एहिठाम नौ प्रकारक भक्तिक व्याख्या कयलनि अछि। - श्रवण, अर्थात हरि कथा सुनु, हरि नामक कीर्तन करु, सदैव हरिक स्मरण करु, हरि वन्दन करु, हरि पद सेवन करु, हरिक दास बनल रहु, हरिक पूजन करु, भगवान ध्यान मे अपन मनकें लगाउ, आ अन्त मे हरि सँ आत्म-निवेदन करु। कवि गोविन्ददासक इएह अभिलाषा छल जे सभ प्राणी हरि सँ एहि प्रकारक भक्ति भाव राखथि। हिनक इएह भक्ति मार्ग छलन्हि। वस्तुतः हिनक नवधा-भक्ति समन्वित अछि।

—x—

डॉ अरविन्द झा